आज
रविवार १४ जनवरी, २०१८ सौर ३० पौष सं. २०७४ वि.

सुभाषित *पृथ्वी लोकमें सर्वोत्तम धर्म है दया। वेदोक्त धर्म सदा फलदायी है। मनको सदा वशमें रखनेवाला चिन्ता मुक्त रहता है। सज्जनोंकी मित्रता कभी पुरानी नहीं पड़ती।* ❑ *वन पर्व*

कठघरे में न्यायपालिका

विवादोंका निस्तारण करनेवाली शीर्ष न्यायिक संस्था स्वयं ही कठघरेमें खड़ी हो गयी है। अभूतपूर्व कदम उठाते हुए सुप्रीम कोर्टके चार वरिष्ठतम न्यायाधीशोंने पत्रकारवार्ताके जरिये मुख्य न्यायाधीशके खिलाफ मोरचा खोलकर सभीको चौंका दिया है। इन चार न्यायमूर्तियोंमें सर्वश्री जे. चेलमेश्वर, कुरियन जोसेफ, रंजन गोगोई एवं मदन लोकुरने सार्वजनिक रूपसे कहा है कि देशकी सबसे बड़ी संस्थामें सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। इनका कहना है कि पिछले कुछ महीनोंसे कार्य निस्तारणमें सुनिश्चित नियमोंकी अवहेलना करके विभिन्न मुकदमोंको निबटानेके लिए खास पीठोंका चयन किया जा रहा है। स्वतन्त्र भारतमें पहली बार ऐसा अवसर आया है जब इस सबसे बड़ी अदालतके अंदरूनी कामकाजको लेकर इस प्रकारकी शिकायतें आयी हैं। इस मामलेको यूं ही दरकिनार नहीं किया जा सकता। न्यायपालिकाके सर्वोच्च मन्दिरका प्रबन्धन पूर्ण रूपसे पवित्रताको परिलक्षित करता रहा है, जिसपर किसी भी प्रकारका छींटा भविष्यके लिए हानिप्रद हो सकता है। यह अत्यन्त विस्मयकारी है कि मुख्य न्यायमूर्तिकी कार्यप्रणालीसे कुछ वरिष्ठ न्यायाधीशोंको लग रहा है कि वह मुकदमोंके निबटारेमें भेदभाव कर रहे हैं, जिनका परिणाम दूरगामी हो सकता है। यह भी स्वयंमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि न्यायमूर्ति रंजन गोगोई विशेष सीबीआईके न्यायाधीश बी.एस. लोयाकी संदिग्ध परिस्थितियोंमें हुई मृत्युका मामला उठाते हैं, जो सोहराबुद्दीन मुठभेड़ काण्डके मुकदमेकी सुनवाई कर रहे थे, जबकि यह मामला उसी दिन न्यायालयकी एक पीठको सौंपा गया था जिस दिन न्यायमूर्ति गोगोई जनताकी अदालतमें बैठे थे। हालांकि इतिहासमें यह पहली बार है कि चार न्यायमूर्ति जनताकी अदालतमें खुलकर सामने आये हैं परन्तु पिछले कुछ महीनोंके घटनाक्रमपर नजर डालें तो इस तरहके मतभेद सामने आते रहे हैं जैसे मेडिकल कालेज मामलेमें मनचाहा आदेश दिलानेके लिए रिश्वतखोरीका आरोप लगा। न्यायाधीश बी.एस.लोयाकी संदिग्ध परिस्थितियोंमें मृत्युके मामलेमें जुड़ी नयी याचिकापर सुनवाईका मुद्दा अत्यन्त सनसनीखेज रहा। पिछले वर्ष न्यायमूर्ति जे.चेलेमेश्वरकी अध्यक्षतावाली दो सदस्यीय पीठने रिश्वतखोरीके मामलेको सामने लानेको कहा था। इससे पूर्व भी सन् १९७४ में चार न्यायाधीशोंने केवल इस मुद्देपर इस्तीफा दे दिया था कि तात्कालीन इंदिरा गांधी सरकारने मुख्य न्यायाधीशके पदपर उनकी वरिष्ठताको नजरअन्दाज कर दिया था। इस मामलेमें इंदिरा गांधीकी लोकप्रियता अत्यन्त प्रभावित हुई थी और विपक्ष इसका लाभ उठाते हुए जनताकी अदालतमें जाकर उन्हें पदच्युत करवा दिया था। अतः हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस तरहके मतभेद लोकतन्त्रकी दीवारको अत्यन्त ही मजबूत बनाते हैं। भारत २१वीं सदीका सबसे बड़ा लोकतन्त्र है, इसे विश्वने भी माना है।

अंतरिक्षमें कीर्तिमान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संघटन (इसरो) ने अंतरिक्षके क्षेत्रमें उपग्रह प्रक्षेपणके शतकोंका कीर्तिमान स्थापित कर विश्वमें भारतके गौरवमें श्रीवृद्धि की है। इससे भारत गौरवान्वित है और इस अभूतपूर्व सफलताके लिए भारतीय वैज्ञानिकोंको कोटिशः बधाई। इससे पहले ऐसे उपग्रहोंके प्रक्षेपणका रिकार्ड था लेकिन शुक्रवारको इसरोने अपने सौवें उपग्रहको अन्तरिक्षमें स्थापित करनेके साथ ३१ और उपग्रहोंको भी सफलतापूर्वक स्थापित किया। इससे उत्साहित इसरो अब चन्द्रयान-२ के प्रक्षेपणकी तैयारियोंमें जुट गया है। इसरोने जो ३१ उपग्रह अन्तरिक्षमें भेजे हैं उनमें तीन भारतीय और २८ उपग्रह छह अन्य देशोंके है। कोर्टोसेट-२ के अलावा भारतका एक माइक्रो और एक नैनो उपग्रह भी भेजा गया है। कनाडा, फिनलैण्ड, फ्रांस, दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन और अमेरिकाके तीन माइक्रो और २५ नैनो उपग्रह भेजे गये हैं। इसमें अकेले अमेरिकाके १९ और दक्षिण कोरियाके पांच उपग्रह हैं। अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकीके अन्तरराष्ट्रीय व्यवसायमें भारतका एक-तिहाई बाजारपर कब्जा हो गया है। कार्टोसेट-२ उपग्रहका उपयोग शहरी और ग्रामीण अनुप्रयोगोंकी निगरानी, तटीय भूमि उपयोग, विनिमय, सड़क नेटवर्क, नक्शा बनाने और जल वितरण जैसी सेवाओंके प्रबन्धनमें किया जायगा। यह अर्थ इमेजिंग सेटेलाइट है, जो दुश्मनपर नजर रखनेके काम आयेगा। इससे भारतको सीमापर आतंकी गतिविधियोंपर नजर रखनेमें आसानी होगी।

लोक संवाद

सोशल मीडियापर आत्मप्रशंसा

महोदय,- फेसबुकपर सवाल उठाया जा रहा है कि लेखक अपने बारेमें कुछ कहे या नहीं! कहे तो कितना कहे। क्या अपने बारेमें कुछ कहना आत्मप्रशंसा है? यह तर्क दिया जाता है कि आज बाजारमें जब प्रचारके बिना कुछ भी नहीं चलता तो क्यों न रचनाकार भी अपनी कृतियोंका प्रचार करें। हो सकता है इससे उसकी किताबें कुछ अधिक बिक जायं। इस दलीलको आधार बनाकर हिंदीके रचनाकार अब खुद अपनी कृतियोंके प्रचारमें जुट गये हैं। लेकिन उनमेंसे कइयोंको इस बातका अहसास ही नहीं है कि अपनी रचनाओंका प्रचार करते-करते वह घोर आत्मप्रशंसामें डूब जाते हैं। दरअसल विज्ञापन और आत्मप्रशंसामें एक बारीक रेखा है, जिसे समझनेकी जरूरत है। जब कोई लेखक बताता है कि उसकी अमुक किताब आयी है तो यह एक विज्ञापन है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन जब वह रोज-रोज यह बताना शुरू कर देता है कि अमुक आलोचकने इसे महान बताया तो यह एक तरहसे खुद ही मूल्यांकन करना हुआ। कई लेखक तो यह बताना शुरू कर देते हैं कि फलां कस्बेसे एक पाठकका फोन आया और उसने कहा कि ऐसी रचना तो मैंने आजतक पढ़ी ही नहीं थी। यह आत्मप्रशंसा है। कुछ लेखक अपनी किताबके साथ अफसरों, खिलाड़ियों और नेताओंकी तस्वीर पोस्ट करना शुरू कर देते हैं। सोशल मीडियाने लोगोंको आत्ममुग्ध बनाया है, जिनमें लेखक भी शामिल है। मैंने बहुत कम लेखकोंको दूसरे साहित्यकारोंके बारेमें बात करते देखा है। ऐसा कम ही देखनेमें आता है कि कोई लेखक यह बताये कि फलांकी रचनाएं उसे बहुत अच्छी लगीं। हिंदीके लेखकोंमें आत्मविश्वास और धैर्यकी कमी दिखाई देती है। उन्हें लगता है वह खूब शोर मचाकर अपनी रचनाको महान साबित कर लेंगे। ऐसा नहीं होता। आज भी हिंदीका आखिरी बेस्ट सेलर सुरेंद्र वर्माका उपन्यास 'मुझे चांद चाहिए' ही है। वह उस दौरमें छपा जब सोशल मीडिया नहीं था। उसका कोई प्रचार नहीं हुआ। लेकिन उसके छपते ही उसकी शोहरत फैलने लगी। लोग उसे खोज-खोजकर खरीदने लगे। यह सिलसिला आज भी जारी है। हिंदीमें एक बड़ी और अदृश्य छन्नी काम कर रही है जो अच्छी और बुरी रचनाओंको अलग-अलग कर देती है। वह देर लगाती है, परन्तु अपना काम ईमानदारीसे करती है। लेखकोंको उसपर भरोसा रखना चाहिए। अनावश्यक कूद-फांद कर वह समाजकी नजरमें खुदको हल्का और अविश्वसनीय बना रहे हैं। -संजय,वाया ईमेल।

प्रार्थनाका विकल्प नहीं

महोदय,- सर्वोच्च न्यायलयमें दर्ज किये जनहित याचिकाके माध्यमसे केंद्रीय विद्यालयकी प्रार्थनापर रोक लगानेकी मांग की गयी है। सोशल मीडिया, मोबाईल, गेम्स आदी बातोंका बच्चोंपर कितना गहरा असर हो रहा है यह हम समाचारोंमें पढ़ रहे है। विज्ञानके कारण सिर्फ भौतिक प्रगति हुई है, वह हमें मानसिक तौरपर समाधान देनेमें पूरी तरह असफल रहा है। विज्ञानके पास ऐसा कोई भी यंत्र नहीं है जो किसीको भी समाधान दे सके। समाधान पानेके लिए प्रार्थना, श्लोकको कोई विकल्प नहीं है। अमेरिकामें कई राज्योंके प्रशासन अपने कामकाजकी शुरुआत वेदमंत्र पठनसे करते हैं। वह एक विज्ञानकी प्रगतिमें शिखरपर रहनेवाला देश है साथमें वह ख्रिस्ती देश है उसके बावजूद भी वहा मंत्रोंका उपयोग हो रहा है। उनसे ही हमें सिखनेकी जरुरत है। -मानसी जोशी, वाया ईमेल।

फुटकर व्यापारियों को खतरा

देशमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेशका सिलसिला बीस वर्ष पहले ही शुरू कर दिया गया था और १९९१ में जब भारतने वैश्वीकरणकी नीतिपर हस्ताक्षर कर दिया था तभी यह माना जाने लगा था कि ऐसा तो होना ही था। अब केन्द्र सरकारने सिंगल ब्रांड सामानोंके उत्पादमें शत-प्रतिशत विदेशी निवेशकी छूट दे दी है।

❑ विजयनारायण

प्रत्यक्ष विदेशी निवेशके सम्भावित खतरोंसे देशके अर्थशास्त्रियोंने सावधान कर दिया था। यहां हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वैश्विक अर्थ नीतिके सांस्कृतिक खतरे भी थे। नब्बेके दशकमें देशभरमें मॉलोंके रूपमें फुटकर व्यापारपर एकाधिकारका नया सिलसिला शुरू हुआ। इन तीस वर्षोंमें देशमें मॉलके निर्माणमें तेजी ही नहीं आयी है सरकारों और बैंकोंने उनकी पूरी मदद की है। बैंकोंके कर्जेसे मॉल बन रहे हैं। कहा जाय तो जनताके धनसे मॉलका निर्माण हो रहा है और उसका मालिकाना अधिकार किसी एक कम्पनी या किन्हीं लोगोंतक ही सिमटकर रह जा रहा है। इस तरह जो एकाधिकारकी स्थिति औद्योगिक उत्पादन या थोक व्यापारके क्षेत्रमें थी वह फुटकर व्यापार क्षेत्रमें भी फैल रही है। यहां यह बात ध्यान देनेकी है कि देशके फुटकर व्यापारी और ऐसे व्यापारियोंके संघटनोंने संप्रग सरकार रही या राजग सरकार है, सबसे मिलकर अपने अस्तित्वकी रक्षाकी मांग करते रहे हैं। लेकिन सचाई यह है कि मालमें भीड़ बढ़ रही है और छोटे व्यापारियों, दुकानदारों और हर तरहके फुटकर व्यापारियोंका धंधा प्रभावित हो रहा है। संप्रग सरकारके दौरमें और राजग सरकारके दौरमें भी फुटकर व्यापारी संघटनोंने कई बार राष्ट्रीय स्तरपर हड़तालें और अनिश्चितकालीन बंदका आयोजन किया। फुटकर व्यापारियोंने सत्याग्रह भी किया और उनकी गिरफ्तारियां भी हुईं। ऐसे संघटनों द्वारा आहूत हड़ताल एवं आन्दोलन सरकार द्वारा दिये गये आश्वासनके बाद ही समाप्त हुए किन्तु अन्तमें सचाई यही दिख रही है कि मालका एकाधिकार बढ़ रहा है और फुटकर व्यापार सिमट रहा है।

देशके फुटकर व्यापारमें तीनसे चार करोड़ लोग लगे हैं। फुटकर व्यापार बड़े शहरोंसे शुरू होकर छोटे शहरों, कस्बों और गांवोंकी बाजारोंतक फैला है। देशमें बड़े शहरसे लेकर गांवोंतक औद्योगिक उत्पादनोंको उपभोक्तातक पहुंचानेका काम फुटकर व्यापारी ही करता रहा है। इन फुटकर व्यापारियों और छोटे कारोबारियोंपर ही जीएसटीकी मार पड़ी है और जीएसटीकी मारसे बचनेके लिए इन फुटकर व्यापारियोंने लम्बी हड़ताल की है। विडम्बना यह रही कि जब देशमें फुटकर व्यापारियोंकी हड़तालें चलती रहीं तो मालोंमें भीड़ बढ़ती रही है। स्वाभाविक रूपसे फुटकर व्यापारी मालके मालिकोंको अपना प्रतिद्वंदी समझता रहा है और यह सचाई है कि उसके अस्तित्वपर खतरा बढ़ता जा रहा है। उतनी ही सचाई यह भी है कि सरकार फुटकर व्यापार और व्यापारियोंके अस्तित्वको बचानेकी गारण्टी नहीं दे पायी है।

अब केन्द्र सरकारने हालमें ही सिंगल ब्रांड सामानोंके उत्पादमें शत-प्रतिशत विदेशी निवेशकी छूट दे दी है। इसके साथ ही आवास निर्माणके क्षेत्रमें भी शत-प्रतिशत विदेशी निवेशकी छूट दे दी है। स्वाभाविक है कि सरकार ऐसे निवेशकोंको संरक्षण देगी। सरकार ऐसा मान कर चल रही है कि इन क्षेत्रोंमें कामके लिए विदेशी कम्पनियां आयंगी, कितने बड़े पैमानेपर आयंगी, यह कहना कठिन है। विदेशी कम्पनियोंके लिए अबतकका अनुभव बताता है कि वह या तो नये मॉल खोलेंगी या फिर जगह-जगह फुटकर दुकानें भी खोलेंगी। इससे कुछ नौकरियां बढ़ेंगी जो सरकारका तर्क है, देशी फुटकार व्यापार भी उसी पैमानेपर प्रभावित होगा, जिस पैमानेपर विदेशी माल बिक्रीके लिए देशी बाजारोंमें आयगा।

> अब केन्द्र सरकारने आवास निर्माणके क्षेत्रमें भी शत-प्रतिशत विदेशी निवेशकी छूट दे दी है। स्वाभाविक है कि सरकार ऐसे निवेशकोंको संरक्षण देगी। विदेशी कम्पनियोंके लिए अबतकका अनुभव बताता है कि वह या तो नये मॉल खोलेंगी या फिर जगह-जगह फुटकर दुकानें भी खोलेंगी। इससे कुछ नौकरियां बढ़ेंगी जो सरकारका तर्क है, देशी फुटकार व्यापार भी उसी पैमानेपर प्रभावित होगा, जिस पैमानेपर विदेशी मॉल बिक्रीके लिए देशी बाजारोंमें आयगा। इसलिए फुटकर व्यापारी अपने अस्तित्वकी गारण्टी मांगता रहा है, जो उसे नहीं मिल सकी है और देशके तीन-चार करोड़ फुटकर व्यापारियोंके अस्तित्वपर खतरा मंडराता जा रहा है।

इसलिए फुटकर व्यापारी अपने अस्तित्वकी गारण्टी मांगता रहा है, जो उसे नहीं मिल सकी है और देशके तीन-चार करोड़ फुटकर व्यापारियोंके अस्तित्वपर खतरा मंडराता जा रहा है। भारत सरकारने बीमार सरकारी कम्पनी एयर इण्डियाके अस्तित्वको बचानेके लिए ४९ प्रतिशततक विदेशी प्रत्यक्ष रूपसे निवेशको गारण्टी दे चुकी है। सचाई यह है कि सरकारी कम्पनी लगभग एक लाख करोड़के घाटेमें चल रही है और वह नये जहाज नहीं खरीद पा रही है। केन्द्र सरकार भी नये विमानोंकी खरीदमें धन लगाना नहीं चाह रही है। शायद इसीलिए एयर इण्डियामें प्रत्यक्ष विदेशी निवेशका रास्ता अपनाया गया है। लेकिन जो भी विदेशी निवेश आयगा, वह अपनी शर्तोंपर आयगा। स्वाभाविक रूपसे वह एयर इण्डियाके प्रबन्धनपर भी एकाधिकार चाहेगा। यह एक लम्बी प्रक्रिया होगी और कोई रास्ता एयर इण्डियाको बचानेके लिए निकल पायगा, यह कहना कठिन है। यह एक विडम्बनाकी स्थिति है कि एक ओर जहां सरकारी कम्पनी एयर इण्डिया लगातार घाटेमें चल रही है, वहीं निजी कम्पनियां मुनाफेमें चल रही हैं और उनके विमानोंकी संख्या भी बढ़ रही है।

भारत सरकार विगत तीस वर्षोंसे लगातार विदेशी निवेशके दरवाजे खोल रही है। लेकिन एक भारी अन्तर्विरोधकी स्थिति यह है कि जिस पैमानेपर विदेशी निवेशके आनेकी उम्मीद थी, वह कभी भी नहीं आया। चालू वित्त वर्ष २०१६-१७ में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मात्र नौ प्रतिशत ही बढ़ा है, जो बढ़कर ४३.४८ डालरतक पहुंचा है। भारतके मुकाबले चीनमें विदेशी निवेशक जिसमें प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ही शामिल है, दसगुनासे भी अधिक बढ़ा है। नब्बेके दशकमें ही यूरोप एवं अमेरिकाका विदेशी निवेश चीनमें इतने बड़े पैमानेपर हुआ कि उनकी अर्थव्यवस्था आज विश्वकी दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गयी है। नब्बेके दशकमें ही चीनकी विकास दर दस प्रतिशत प्रति वर्षतक पहुंच गयी थी जो फिलहाल सात वर्ष प्रति वर्षपर कायम है। इसके ठीक मुकाबले भारतमें मुद्रा बंदी और जीएसटीके जो प्रयोग किये गये, उसके कारण भारतकी विकास दर चालू वित्त वर्ष या २०१६-१७ में, जो ३१ मार्च २०१७ तक समाप्त हो जायगा ६.५ प्रतिशत प्रति वर्षपर आकर अटक जायगी। ऐसा दावा भारतके वित्तमंत्रीने हालमें ही अपने एक सरकारी बयानमें दिया है।

विदेशी निवेशका मुख्य उद्देश्य उत्पादन एवं विकास दरको बढ़ाना होता है और आंकड़े ऐसा बताते हैं कि हमारे देशकी सरकारोंने समय-समयपर जो सम्भावनाएं जतायी थीं, वैसा हो नहीं पाया है। यदि उत्पादन नहीं बढ़ता है, विकास दर नहीं बढ़ती है और लोगोंको रोजगार नहीं मिलता है तो यही विदेशी निवेश एक दिन भारी पड़ जायगा। इस खतरेको समय रहते भांप लेना चाहिए और देशी फुटकर व्यापारियोंके साथ ही देशकी अस्तिमताके खतरेको भी ध्यानमें रखना चाहिए। देशकी अर्थव्यवस्था नहीं सुधरी तो यही विदेशी निवेश एक दिन विदेशी कर्जकी फांस बन जायगा।

मकर संक्रान्ति पर सूर्य का स्नेह स्पर्श

ईसाके नये सालकी जनवरी बहुधा कोहरेका कम्बल ओढ़कर आती है। संप्रति सर्दी ठिठकी-सी है। सूर्यका तेजस् ताप हम सबतक नहीं आ रहा है तो भी सूर्यदेव कृपालु हैं। वह संसारकी अपनी संततिका हालचाल लेने प्रति दिवस आते हैं, ताप उड़ेलते हैं लेकिन बर्फसे लदे मरूतगण सूर्य तापको बीचमें ही ठंडा कर रहे हैं।

❑ हृदयनारायण दीक्षित

सूर्य अपनी ताप उड़ेलते हैं लेकिन बर्फसे लदे फदे मरूतगण सूर्य तापको अधबिचमें ही ठंडा कर रहे हैं। प्रश्नोपनिषद्के ऋषि पिप्पलाद याद आ रहे हैं। उन्होंने सूर्यको पृथ्वीका प्राण बताया- आदित्यो ह वै प्राणो। कहीं ऐसी ही ठंडकमें सूर्यकी लुकाछिपीमें वह भी बेचैन तो नहीं थे? ऋग्वेदके ऋषियोंने सूर्यको ठीक पहचाना था। बताया है कि सूर्य तीन भाई हैं। पहले वह स्वयं है और दूसरे अग्नि और तीसरे वायु। हमारा मन सूर्यसे प्रश्न करना चाहता है कि आप अपने तीसरे भाई वायुको बर्फ स्वानसे क्यों नहीं रोकते। वह शून्य अंशी ताप ढोकर हम सबको ठंडसे व्याकुल क्यों करता है? धूप कोहरेमें हम आपके दरशसे वंचित है। आज आप मकर राशिके क्षेत्रमें पधारे हैं। आपका स्वागत। हम आपके छोटे भाई वायुको भी नमस्कार करते हैं लेकिन वायु स्वाभाविक रूपमें यहां आयें। कृपया कोहरेका कम्बल ओढ़कर न आये। सामान्य तापमें मकर संक्रान्तिका मजा ले। हमारी स्तुतियां सुनें।

सुनो वायु देव। भारतके लोग सहस्त्रों वर्षसे आपके उपासक हैं। निस्संदेह आधुनिक समयमें हम मनुष्योंने आपकी कायाको आहत किया है। पहले मकर संक्रान्तिके अवसरपर आपका प्रवाह स्नेह स्पर्श देता था। हमारे श्वास-प्रश्वास, प्राण पुलक देते थे। गीत छन्द गायनमें ली गयी वायु तरंगें स्वस्थ वातायन रचती थी। हमारे पाप देखिये। हमने आपकी कायामें कार्बन डाईआक्साइड जैसी तमाम डाइनें उड़ेल दी हैं। गलती हमारी। मकर संक्रांतिमें भी वायु दूषित है। बसंतने अपने आगमनकी सूचना भेज दी है। यह सूचना रूखी तिथिमूलक ही है। वायुमें गंध नहीं। फूलोंमें रस नहीं। पक्षियोंके गले रूंधे हैं। गीत उगे नहीं। छंद मकरंदका रिश्ते खो रहे हैं। सरस्वतीकी वीणाके तार तरंगमें है लेकिन छंद हम सबतक नहीं आते। वायुमें धूलि कण हैं। सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो रहा है। हमारी जिजीवीषाको खाये जा रहा है यह दुघर्ष-आधुनिक काल।

हम सूर्य देवकी शरणमें हैं। वह प्रत्यक्ष देव हैं। माता पृथ्वी ठीक ही अनंत कालसे उनकी परिक्रमा करती हैं। इस परिक्रमाका भाववृत्त अनूठा है। वह स्वयं अपने केन्द्रपर घूमती हुई सूर्य देवकी परिक्रमा करती हैं। वैदिक पूर्वजोंने सूर्य साक्षात्कार किया था। ऋग्वेदमें बताते हैं 'सूर्यके एक चकवाले रथमें सात घोड़े जुते हैं।' सूर्य अनुभूतिमें अंक सातकी महिमा बड़ी प्यारी है। सात दिन, सात घोड़े, सात स्वरोंमें स्तुति करती सात बहने। पूर्वजोंका मन ऐसी कविता रचकर भी नहीं अघाता। प्रश्न करते हैं कि 'प्रथम जायमान किसने देखा जो अस्थिरहित होकर भी संसारका पोषण करते हैं। वह विज्ञ सप्त किरणोंको कैसे फैलाते हैं?' पूर्वज अपने प्रश्नोंको लेकर अधीर हैं। वह अपना अज्ञान स्वीकार करते हैं 'हम अज्ञानी हैं लेकिन जानना चाहते हैं कि इस अन्जमाका वास्तविक रूप क्या है? जो सुंदर गतिशील सूर्यके रहस्यके जानकार हैं वह आयें और हमको बतायें।' वह सूर्यके निराधार लटके होनेपर भी प्रश्न करते हैं 'आप आकाशमें कैसे लटके हैं। कोई बांस या आधार भी नहीं है। इसका रहस्य क्या है?' हम भी आधुनिक कालके सूर्य आस्तिक होकर एक प्रश्न सूर्यसे पूछते हैं 'आप हम सबके संरक्षक अभिभावक होकर भी कोहरे और भयंकर शीत लहरमें क्यों छिप जाते हैं?' हम अपने संरक्षक सूर्यके तेज ओज और प्राण प्रकाश ऊर्जासे ही जीवित रहते हैं? कृपया ऐसा न करें। पूर्वज प्रकृतिकी शक्तियोंके जानकार थे। सूर्य प्रकृतिकी विराट शक्ति है। पूर्वज उनसे बातें करते थे। कोई कह सकता है कि यह संवाद एकतरफा ही रहा है। लेकिन मौन भी भाषाका ही सुन्दर आयाम है। हमने स्तुति की। प्रगाढ़ भावमें सूर्यका तेज देखा। सूर्य मुस्कराये। यह हमारी अनुभूति है। हम पहलेकी तुलनामें अतिरिक्त आनंदित हुए यह हमारी प्रत्यक्ष उपलब्धि है। ऋग्वेदके तीसरे मण्डलमें ऋषि विश्वामित्रका मंत्र गीत गायत्री नामसे विश्वविख्यात है। 'तत्सवितुर्वरणेयम भर्गो देवस्य' संभवतः विश्वकी प्रथम कविता है। सातवलेकरका अनुवाद है, 'हम सविता देवके श्रेष्ठ, वरण करने योग्य तेजका ध्यान करते है यह सविता हमारी बुद्धियोंको उत्तम मार्गमें प्रेरित करे। मनुष्यका सहज बोध है जो सविता (सूर्य) को देखकर जागृत होता है। उसे नये ज्ञानकी ओर प्रेरित करता है।' प्राचीन यूनानी दर्शनमें भी सूर्य उपासना है। प्लेटोंके 'रिपब्लिक' में इसका उल्लेख है।

ऋग्वेदके पूर्वजोंकी जिज्ञासा बड़ी है 'को ददर्श प्रथमं जायमान?' किसने देखा पहला सूर्योदय। प्रथम प्रकाशरसको पिया किसने? हमने सूर्यको देखा है बचपनमें प्रातः काल। उगनेके पहले। अरुण-तरुण लाल होते पूरबकी ओर आकाशमें। सूर्य किरणें स्वर्णिम होती हैं। ऋग्वेदके पूर्वजोंने स्वर्ण रश्मिकी गहरी अनुभूति पायी थी। कहा है-सूर्य स्वर्ण आखोंवाले हैं। 'वह हिरण्याक्ष' हैं। उनका रथ-हिरण्येन' स्वर्णिम है। सूर्यके हाथ सोनेके- हिरण्यपाणि' हैं। उनकी जीभ भी सोनेकी हिरण्यजिह्वः है। यहां सब कुछ सोनेका ही है। सूर्योदयके समय सोनेके कारण असंख्य लोग हिरण्यपाणि सोनेके हाथोंवाले सूर्यकी कृपासे वंचित रहते हैं। सूर्योदयका देखना अनन्त आनन्द अनुभूति है। ऋग्वेदके पूर्वजोंने गाया है-हम सौ बरसतक सूर्य देखें। मनुष्य जीवनमें जागरणकी महत्ता है। बाल रविके दर्शन असंभव है। फिलहाल कोहरेकी चादर है, इस चादरने ताप घटाया है। इसी तापके बढ़नेकी प्रतीक्षा है।

आत्मबोध

मानवता की सेवा

❑ अवधेशानंद गिरि

मानव जीवनको मूल्यवान बनानेकी क्षमता जिन गुणोंमें होती है, उन्हें ही जीवन मूल्य कहा जाता है। उदात्त और सात्विक आचरणसे शाश्वत मानवीय मूल्योंकी सहज स्थापना होती है। जहां सद्गुण हैं, वहीं प्रसन्नता आती है। सदाचार मानवताकी सर्वोपरि सेवा है। मनुष्य जितने भी सुकृत करता है, उसका मूल सत्य यही है। जीवनमें सत्य ही ऐसा धर्म है जिससे सामाजिक और व्यावहारिक जीवनमें प्रतिष्ठा मिलती है। गोस्वामी तुलसीदासजीकी आस्था है, धरमु न दूसर सत्य सामना। मुंडकोपनिष्दमें उल्लेख है सत्यमेव ज्यते नानृतम अर्थात सत्यकी सदैव विजय होती है। असत्यसे बढ़कर जगतमें दूसरा कोई पाप नहीं। इसीलिए कबीरदासजीका कथन है सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। असत्य भाषीके सत्य बोलनेपर भी कोई विश्वास नहीं करता। नहिं असत्य सम पातक पुंजा अर्थात असत्यके समान कोई दूसरा पाप नहीं है। सत्य स्थायी और असत्य अस्थायी। जहां असत्यमें आंखें मिलाकर बातें नहीं की जाती, वहीं सत्यमें कोई भय नहीं रहता। आचार्य चाणक्यने कहा है, सत्यसे ही पृथ्वीमें धारण करनेकी क्षमता आती है, सत्यके कारण ही सूर्य तपता है, सत्यकी बातपर ही वायु संचार होता है और सत्यमें ही सर्वस्वकी प्रतिष्ठा समाहित है। सद्व्यवहार ही जीवनका परम मूल्य है। जिस व्यवहारमें हमें सुख मिलता है, उससे दूसरोंको भी सुख मिलेगा और जिस व्यवहारसे हमें कष्ट होता है, उससे दूसरोंको भी अवश्य कष्ट होगा। संत नामदेवकी माताने उन्हें बचपनमें यह सीख दी थी कि ऐसी वाणी नहीं बोलनी चाहिए, जिससे किसीको कष्ट हो। निरपराध प्राणीको अकारण दुःख देनेसे अनर्थ होता है। निर्बलकी सहायता करनेके लिए भी कभी-कभी हममें कोई अदृश्य शक्ति आ जाती है। किसी व्यक्तिकी हंसी उड़ाना उसे अपना शत्रु बनाना होता है। सदाचार वाणीकी मधुरता विशेष उपादेय है। कबीरदासजी मीठी वाणीको उपयोगी बताते हैं मधुर वचन है औषधि, कटु वचन है तीर। मधुर वाणीके बिना पूरा जीवन व्यर्थ चला जाता है। असंयमित भाषा ही अधिकतर रिश्ते बिगाड़ती है। क्षमा मांगनेसे शरीरमें ऐसे रसायनोंका प्रवाह बढ़ जाता है, जो सकारात्मक सहन शक्ति बढ़ाता है। श्रेष्ठ चरित्र निर्माण एक सतत और सूक्ष्म प्रक्रिया है, जो निरंतर चलती रहती है। मधुर वाणीमें नकारना भी अप्रिय नहीं लगता। इस संदर्भमें गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं। तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुं ओर, वशीकरण इक मंत्र है तज दे वचन कठोर मधुर वाणीसे की गयी सच्ची प्रशंसा सकारात्मक प्रेरणाका कार्य करती है। 'रस निधि' में वाक् संयमका निरूपण है। कथनीसे अधिक जिनकी करनी रहती है, वही सिद्धजन कहलाते हैं। सदाचारके लिए मधुर वाणी और सत्यका अनुशीलन वरदान स्वरूप है।

डब्ल्यूटीओ सम्मेलन से मिली निराशा

❑ आर.डी. सत्येन्द्र कुमार

विश्व व्यापार संघटन (डब्ल्यूटीओ) के ग्यारहवें मंत्रिमण्डलीय सम्मेलनसे जिन लोगोंने बड़ी उम्मीदें सजो रखी थीं, उनके हाथ महज निराशा लगी। कुल मिलाकर यह बहुप्रतीक्षित एवं बहुप्रचारित सम्मेलन एक ऐसा सम्मेलन साबित हुआ, जहां तमाम ताम-झामके बावजूद वास्तविक मिलन नहीं था। मिलन वैसे सम्भव भी नहीं था, क्योंकि विकसित देशों और विकासशील देशोंके हित परस्पर इतने विरुद्ध थे कि सम्मेलनका यही अपरिहार्य हश्र होना ही था। आर्थिक विशेषज्ञोंका मानना भी है साम्राज्यवादकी हृदयस्थली संयुक्त राज्य अमेरिकाने विघ्नवादी रवैया अपनाकर स्वार्थोंके इस समरमें खलनायककी भूमिका अदा की। वैसे विकसित एवं विकासशील देशोंके बीच मतैक्यका अभाव अर्जेंटीनाके ब्यूनस आयर्स शहरमें आयोजित इस सम्मेलनसे पहले ही विद्यमान था लेकिन इस मिलनविहीन सम्मेलनने उसे मध्य दिनके तेज प्रकाशकी तरह उजागर कर दिया। ऐसेमें जिन लोगोंने सम्मेलनसे आम सहमतिकी उम्मीद की थीं, उन्हें निराश होना ही था। विशेषज्ञोंका आकलनके अनुसार सदस्य देश खाद्यान्न सुरक्षा अधिकार एवं विकासकी केन्द्रीयतापर कोई भी निर्णय ले सकनेमें असमर्थ साबित हुए। स्पष्ट है कि महत्वपूर्ण मुद्दोंपर सदस्य देशोंके दो खेमोंके बीच व्यापक एवं गहन असहमतिकी स्थिति अंततक बरकरार रही।

वैसे इस घनीभूत निराशाके बीच डब्ल्यूटीओ मंत्रि-परिषदके सम्मेलनने सदस्य देशोंसे यह आश्वासन अवश्य ले लिया कि वह २०१९ तक फिशरीज सब्सिडीजके कुछ रूपोंको प्रतिबंधित कर देंगे। चूंकि डब्ल्यूटीओमें सभी निर्णय सर्वसम्मतिसे लिये जाते हैं, इसलिए किसी भी मुद्देपर एक भी सदस्य देशके विरोधसे सम्बन्धित प्रस्ताव खारिज हो सकता है। वैसे भारतने भी उस प्रस्तावको जिसे कई विकसित एवं विकासशील देशों द्वारा लाया गया था, विफल कर दिया था जिसमें २१वीं सदीकी नयी चुनौतियोंका जिक्र था। इनमें ई-कामर्स, निवेश सुगमता सुलभ कराने और छोटी कम्पनियोंके लिए प्रस्तावित मानकोंका जिक्र था। ऐसा करनेके लिए उसने यह रणनीति अपनायी कि सदस्य देश पहले महत्वपूर्ण मुद्दों, मसलन खाद्यान्न सुरक्षा, विकासकी केन्द्रीयता आदिपर विचार-विमर्श कर निर्णय लें। यह मुद्दे २००१ में दोहा दौरके जारी मुद्दोंमें थे जिनका प्राथमिकताके स्तरपर समाधान आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी था।

अब डब्ल्यूटीओके महानिदेशक राबर्टो अजेवेदोने कहा कि हम कई क्षेत्रोंमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत कार्यक्रमोंपर भी सहमत न हो सके। मैं जानता हूं कि बहुतोंके लिए हताशा विशेष रूपसे कड़वाहटभरी है। उनसे जब यह जाननेकी कोशिश की गयी कि विश्व व्यापार संघटन महत्वपूर्ण मुद्दोंसे ऐसी स्थितिमें भला कैसे निबट सकेगा, जबकि उसके बहुतसे सदस्य देशोंने उन निर्णयोंको भी कार्यान्वित नहीं किया, जो इस सम्मेलनके पहले आयोजित मंत्रिपरिषदीय सम्मेलनमें लिये गये थे तो महानिदेशकने कहा, यह निराशाजनक है कि ऐसे कुछ क्षेत्रोंमें भी जिनमें मंत्रिपरिषदीय आदेश प्राप्त थे, हम कोई नतीजा हासिल नहीं कर सके। लेकिन हम प्रयास त्यागते नहीं है। हम प्रयास महज जारी रखते हैं। यही मंत्रिपरिषदीय पद्धतिका स्वभाव है।

अपने अनुभवोंको साझा करते हुए डब्ल्यूटीओके महानिदेशकने साफ कहा कि मुझे याद है कि अनेक बार हमें परिणाम नहीं प्राप्त हुए लेकिन इसका मतलब यह नहीं हुआ कि हम रुक गये। उसका यह मतलब भी नहीं हुआ कि चूंकि हमें परिणाम नहीं मिले, इसलिए बादमें भी नहीं मिलेंगे। इन अति कठिन मसलोंपर परिणाम पानेको एक ही रास्ता है और वह यह कि हर पक्ष लचीला नजरिया अपनायें। वैसे इस सम्मेलनके व्यापक व्यथा स्थितिसे भरपूर माहौलमें शान्ति क्लाजने कुछ गुल तो खिलाया ही। इसके चलते कुछ मुद्दोंपर यथास्थिति बरकरार रही जिसका लाभ विकासशील देशोंको भी एक सीमातक सम्भवतः मिल सकता है। एक मिसाल लें। शान्ति क्लाजके तहत जिसके चलते अपनी खाद्य सुरक्षासे निबटनेके लिए खाद्यान्नके सार्वजनिक एकत्रीकरण करनेवाले विकासशील देशोंके विरुद्ध अन्य देश शिकायत दर्ज नहीं करा सकते, भारत एवं चीन जैसे देशोंके हितमें रहा हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिकाने इस यथास्थितिपर जोर-शोरसे हमला बोला था जो उक्त कारणसे विफल साबित हुआ। यही हश्र कमोबेश ई-कामर्सको गति देनेके विकसित कहे जानेवाले देशोंके सुनियोजित प्रयासोंका भी हुआ। डब्ल्यूटीओके इस सम्मेलनके निर्णयानुसार ऐसे मुद्दोंपर २०१९ की मंत्रिपरिषदीय बैठकके पहलेतक विचार-विमर्श नहीं किया जा सकेगा। इसे भी भारत द्वारा अपने पक्षमें गये निर्णयके रूपमें देखा जा रहा है जिसे आर्थिक विशेषज्ञोंका काफी बड़ा तबका सहज, स्वाभाविक, प्रत्याशित एवं सकारण ही मानता पाया जा रहा है। काबिलेगौर है कि विकसित देशोंने २००१ के दोहा दौरके विकास विषयक निर्णयको बदलवा डालनेके लिए इस मंत्रिपरिषदीय वार्तामें हर सम्भव कोशिशें कीं लेकिन इस बाबत उन्हें फिलहाल कामयाबी हासिल न हो सके। सम्मेलनमें विमर्शके दौरान खुल कर सामने आया कि विकासशील देश ई-कामर्स और लघु कम्पनियोंकी बाजार पहुंच जैसे मुद्दोंको फिलहाल ठण्डे बस्तेमें तबतक पड़े रहने देना चाहते हैं जबतक दोहा दौर २००१ के निर्णयोंको कार्यान्वित नहीं कर लिया जाता। अमेरिकाने जोर देकर यह भी कहा कि कुछ देश इसका इस्तेमाल नियमोंसे छूट लेनेके लिए करना चाहते हैं। उसके अनुसार ऐसे देशोंमें दुनियाके कई सबसे धनी देश भी शामिल हैं। उसने यूरोपीय संघ (ईयू) और जापानके साथ मिलकर एक संयुक्त वक्तव्य भी जारी किया जिसके निशानेपर चीन था। इसका जोर व्यापारको तोड़ने-मरोड़नेवाले कार्यकलापोंपर था। इसके विपरीत, भारत और चीनने उन पश्चिमी देशों द्वारा व्यापारको विकृत करनेवाली कृषि सब्सिडीजकी अलोचना करनेवाला एक संयुक्त प्रस्ताव सम्मेलनमें जारी किया। कुला मिलाकर ब्यूनस आयर्स सम्मेलन दृष्टिकोणके उस टकरावकी दृष्टिसे विशेष रहा जो विकासशील एवं विकसित देशोंके प्रतिनिधियोंके बीच देखनेमें आया। यह टकराव कितनी हकीकत और कितना फसाना था, इसका अन्तिम रूपसे फैसला तो भविष्यकी अदालतमें ही हो सकेगा।